जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भटकना श्रद्धा का दोष है और अटकना चारित्र की कमजोरी है।
– बिन्दु में सिन्धु, पृष्ट – 12

वर्ष : 26, अंक : 15 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भारतीय संविधान एवं जैन अल्पसंख्यक

आर. एम. कोठारी (आई.ए.एस.) से.नि.

भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों के संरक्षण एवं अधिकार अनुच्छेद 29 व 30 में वर्णित हैं। राजस्थान सहित अनेक राज्यों में जैनों को अनुच्छेद 30 में **धार्मिक अल्पसंख्यक** घोषित किया गया है।

राजस्थान सरकार ने 19 सित. 03 को निम्न अधिसूचना जारी की है –

राजस्थान सरकार
समाज कल्याण विभाग

क्रमांक : एफ 7(4)(9) अराआ/विकास/सकवि/02/62784 **जयपुर दिनांक 19/9/2003**

अधिसूचना

राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 2001 की धारा 2 के खण्ड (iii) के उपखण्ड (ख) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये राज्य सरकार उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिये राजस्थान राज्य में जैन समुदाय को इसके द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित करती है।

राज्यपाल के आदेश से,
ललित मेहरा (शासन सचिव)

इस अधिसूचना से जैन समुदाय को क्या हानि हुई है ? व क्या लाभ हुआ है ? यह जानना जरूरी है ह्न साथ ही कुछ शंकायें उठ रही है, उन्हें भी दूर करना आवश्यक है।

हानि – अल्पसंख्यक (धार्मिक अल्पसंख्यक) घोषित होने से किसी भी प्रकार से हानि नहीं हुई है।

मुख्य धारा – इस घोषणा से जैन राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग नहीं हो रहे हैं, केवल अपना धर्म, शिक्षा व संस्कृति का संरक्षण अच्छी तरह से व विशिष्ट अधिकारों के साथ कर सकेंगे।

हिन्दू विधि – जहाँ तक कानून का प्रश्न है, जैनों पर हिन्दू विधि ही लागू रहेगी। जैसे - (1) विवाह (2) उत्तराधिकार (3) नाबालिग व उसकी संरक्षणता (गार्जियनशिप) (4) गोद लेने व भरण-पोषण आदि के संबंध में। अल्पसंख्यक हो जाने से इनका प्रभाव समाप्त नहीं होगा। ऐसा स्पष्ट प्रावधान भारतीय संविधान व सन् 1956 में पारित हिन्दू कानून में किया गया है।

(1) हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा 2 (1)(ख)
(2) हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा 2 (1)(ख)
(3) हिन्दू अवयस्कता और संरक्षणता अधिनियम की धारा 3(ख)
(4) हिन्दू दत्तक ग्रहण तथा भरण-पोषण अधिनियम की धारा 2(ख)

उपरोक्त चारों कानून में एक जैसी भाषा में निम्न प्रावधान है –

यह अधिनियम लागू है – ऐसे किसी भी व्यक्ति को जो धर्मत: जैन हो।

शंका निवारण

1) अल्पसंख्यक संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 के तहत घोषित है।

2) अल्पसंख्यक न तो पिछडे वर्ग (बेकवर्ड) न अनुसूचित जाति (शिड्यूल कास्ट) व न अनुसूचित जन जाति (शिड्यूल ट्राइब) में गिने जाते हैं। उनके लिये अनुच्छेद 16(4), 16(5), 340, 341 व 342 में प्रावधान हैं न कि अनुच्छेद 29 व 30 में।

3) अल्पसंख्यक को नौकरियों में, विधानसभा में व लोकसभा में किसी भी प्रकार का रिजर्वेशन प्राप्त नहीं है।

लाभ

अल्पसंख्यक घोषित होने का मुख्यत: सबसे अधिक लाभ जैन शिक्षण संस्थाओं को प्राप्त होगा। जैन शिक्षण संस्थाओं को निम्न लाभ होंगे –

जैन शिक्षण संस्थायें

1) अपना अलग अस्तित्व बनाये रख सकेगी।
2) मैनेजमेन्ट (प्रबन्ध) पर जैनों का कन्ट्रोल (नियन्त्रण) रहेगा।
3) जैन विद्यार्थियों को प्राथमिकता से प्रवेश दिया जा सकेगा।
4) जैनों को नौकरी में प्राथमिकता दी जा सकेगी।
5) जैन धर्म की प्रार्थना/स्तुति की जा सकेगी।
6) जैन संस्कृति व दर्शन का समुचित प्रचार-प्रसार का विशेष अधिकार प्राप्त होगा।

(शेष पृष्ठ 4 पर ....)

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा 38

– रतनचन्द भारिल्ल

मुनिव्रत लेने की पात्रता का उपदेश

एक दिन वीर वसुदेव अटवी में भ्रमण करते हुए अचानक एक तपस्वियों के आश्रम में पहुँच गये। वहाँ उन्होंने तपस्वियों को राजकथा और युद्धकथा के रूप में विकथायें करते देखा, जो तपस्वियों के योग्य कार्य नहीं था। उन्होंने ये सोचा ह्न ''विकथाओं से संतों को क्या–प्रयोजन? तपस्वियों को तो मात्र धर्मकथायें या धर्मध्यान ही करना चाहिए।''

कुमार वसुदेव ने आश्चर्यचकित होकर उनसे पूछा ह्न *''अरे, तपिस्वयों! आप लोग इसतरह विकथाओं में आसक्त क्यों हो? तापस तो वे कहलाते हैं जो केवल तप और संयम की साधना करें, आत्मा–परमात्मा की आराधना करें तथा तत्त्वचर्चा करें, वीतराग कथा करें। तपस्वियों को पापबन्ध करनेवाली सांसारिक बातों से क्या प्रयोजन ?''* कुमार वसुदेव का तपस्वियों से ऐसा कहना छोटे मुँह बड़ी बात नहीं थी; क्योंकि यदि राजा प्रजा में कहीं कोई अनुचित कार्य देखे और वह चुप रहे तो यह भी उचित नहीं हैं, *गलती करना और गलती को अनदेखा करना ह्न दोनों बराबर के अपराध हैं।* अतः कुमार वसुदेव ने ठीक ही किया।

तपस्वियों ने भी अपनी गलती का अहसास करते हुए कुमार वसुदेव का यथायोग्य अभिवादन करके कहा ह्न ''हम लोग अभी नवीन दीक्षित हैं, हमें अभी तपस्वियों के कर्त्तव्यों का कुछ भी ज्ञान नहीं है। अभी हम यह भी नहीं जानते हैं कि तपस्वियों की वृत्ति कैसी होना चाहिए?''

अपने तपस्वियों का वेष धारण करने की घटना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा ह्न ''इसी श्रीवास्ती नगरी में यशस्वी एवं पुरुषार्थी 'एणीपुत्र' नाम का एक राजा है। उसकी प्रियंगुसुन्दरी नामक एक अत्यन्त सुन्दर कन्या है। उसके स्वयंवर के लिए एणीपुत्र राजा ने हम सब राजाओं को बुलाया; परन्तु कारणवश उस कन्या ने हम लोगों में से किसी को भी पति रूप में नहीं चुना। जिन्होंने अपमान महसूस किया, उन्होंने तो एणीपुत्र को युद्ध करने को ललकार; परन्तु एणीपुत्र की अजेय शक्ति के सामनें कोई नहीं टिक सका। सब इधर–उधर तितर–बितर होकर छिप गये। हम भी उन्हीं में से हैं जो यहाँ तापसों के रूप में रह रहे हैं। वस्तुतः हम तापस नहीं हैं। इसकारण हम तप, संयम और आत्मा–परमात्मा के स्वरूप का एवं उसकी साधना–आराधना के बारे में कुछ भी नहीं जानते। आपकी बातों से ज्ञात होता है कि आपको तत्त्वज्ञान है, अतः यदि संभव हो तो आप हमें तत्त्वज्ञान का उपदेश दीजिए, धर्म का स्वरूप समझाइए, जिससे हम सच्चे तापस बनकर आत्मा का कल्याण कर सकें। अब हमें संसार की क्षण–भंगुरता और लौकिक सुखों की असारता का आभास तो हो गया है। अतः अब हम आत्मकल्याण ही करना चाहते हैं। घर वापिस नहीं जायेंगे। अतः इस विषय में कुछ हितोपदेश दीजिए।

वेषधारी उन तपस्वियों के निवेदन पर कुमार वसुदेव ने संक्षेप में जो मार्गदर्शन दिया, वह इसप्रकार है ह्न

''हे तपस्वियों! तुमने यह उत्तम विचार किया कि संसार की असारता को जानकर आत्महित में लगने का निर्णय लिया है। सचमुच जीवन में यदि कुछ करने लायक है तो एकमात्र यही है। *सबसे पहले शास्त्र स्वाध्याय द्वारा ज्ञानस्वभावी निज आत्मतत्त्व का निर्णय करना चाहिए तथा भेदज्ञान करने के लिए जीव और अजीव को भिन्न जानना फिर आत्मा और देह की भिन्न–भिन्न प्रतीतिपूर्वक देहादि जितने भी परद्रव्य हैं, उनसे जैसे–जैसे अनुराग कम होता जाये, तदनुसार व्रतों का पालन करते हुए जब अनन्तानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण की चौकड़ी नष्ट हो जायें, कषायें कृष होती जायें, 28 मूलगुणोंके निर्दोष पालन की शक्ति प्रगट हो जाये तो आचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेना। दीक्षा के पूर्व एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व के भाव का अभाव हो जाता है तथा छह द्रव्यमय जो यह विश्व है, इसकी सब व्यवस्था स्वतः स्वसंचालित है। इस लोक को न किसी ने बनाया है, न कोई इसका विनाश कर सकता है। ऐसी श्रद्धा प्रगट हो जाती है।*

इसके लिए सर्वप्रथम सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की शरण में रहकर वीतरागी देव और निर्ग्रन्थ गुरु के बताये मोक्षमार्ग को यथार्थ जानें, पहचानें फिर पर की प्रसिद्धि की हेतुभूत पाँचों इन्द्रियों और मन के विषयों को जीते, उन्हें मर्यादा में ले। एतदर्थ बारह अणुव्रत धारण करे। और क्रम–क्रम से ग्यारह प्रतिमाओं को धारण करते हुए आत्म–साधना के मार्ग पर अग्रसर होवे। जैसे–जैसे अन्तरोन्मुखी पुरुषार्थ बढ़ता जाये। कषायें कृष होती जायें, निर्दोष 28 मूलगुण पालन की शक्ति हो जाये, तब मुनिव्रत धारण की योग्यता आती है; क्योंकि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान के बिना सदोष तपस्वी होना कल्याण का मार्ग नहीं है; बल्कि हानिकारक हैं। यद्यपि तापस होना अति उत्तम है; क्योंकि मुनि हुये बिना न तो आज तक किसी को मुक्ति मिली है और न मिलेगी, किन्तु जल्दबाजी में अज्ञानतप करने से कोई लाभ नहीं होता। अतः मोक्षमार्ग में समझपूर्वक ही अग्रसर होना चाहिए। अन्यथा अपना तो कोई लाभ होता नहीं, तापस पद भी बदनाम होता है।

तापसों ने पूछा ह्न ''ये निश्चय मोक्षमार्ग क्या हैं। बारह व्रत क्या हैं, कृपया बतायें?

वसुदेव ने कहा ह्न हाँ, सुनो ह्न सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप मोक्षमार्ग तो वस्तुतः एक ही है; किन्तु इसका कथन दो प्रकार से किया जाता है एक निश्चय मोक्षमार्ग और दूसरा व्यवहार–मोक्षमार्ग। *जो वस्तु जैसी है, उसका उसी रूप में निरूपण करना अर्थात् सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्ग कहा जाय, वह निश्चयनय है और जो मोक्षमार्ग तो है नहीं, परंतु मोक्षमार्ग का निमित्त व सहचारी है, उसे निमित्तादि की अपेक्षा किसी को किसी में मिलाकर उपचरित कथन करना व्यवहारनय है।* जैसे ह्न मिट्टी के घड़े को मिट्टी का कहना निश्चय और घी का संयोग देखकर उसे घी का घड़ा कहना व्यवहार है।

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

23

प्रश्न : आत्म का अनुभव करने के लिये पुरूषार्थ कैसे करें ? इसकी विधि क्या है ?

उत्तर : प्रथम तो विचार में निरावलम्बीरूप से आत्मचिंतन चलना चाहिये। किसी के आधार बिना ही अन्दर से चले कि मैं शुद्ध हूँ... उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप हूँ। इन विचारों के चलते-चलते अन्दर से ऐसा रस उत्पन्न होता है कि बाह्य में आना अच्छा नहीं लगता। अभी विकल्प है; परन्तु फिर भी ऐसा लगता है कि मैं शुद्धस्वभावी चैतन्यमय हूँ। इसतरह के विचारों का निरंतर मंथन चलते समय अन्य परद्रव्यों के विकल्प भी सहज छूट जाते है। स्वाध्यायादि के समय भी यही लक्ष्य रहना चाहिए। यह द्रव्य, यह गुण, यह पर्याय - ऐसे विचार चलते रहने से जगत के अन्य समस्त विकल्प भी छूट जाते है। अन्य बात समझे उसमें कोई विशेष बात नहीं; किन्तु आत्मा संबंधी विचार निरंतर चलते ही रहना चाहिए। सदैव स्वसत्ता का ही ज्ञान में मंथन चलना चाहिये। इसतरह का प्रयोग तो स्वयं को ही करना पड़ेगा। एक बार विश्वास तो कर ! अन्य चिंताएँ होगी तो यह कार्य नहीं होगा; अत: इसी का अभ्यास बारम्बार कर !

यहाँ पहली शर्त यह है की मुझे एक आत्मा के सिवा अन्य कुछ नहीं चाहिए - ऐसा दृढ़ निश्चय होना चाहिये। दुनिया की कोई भी वस्तु, धन सम्पत्ति, प्रतिष्ठा आदि मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, मुझे तो एक मात्र आत्मा की ही आवश्यकता है - ऐसा दृढ़ निश्चय होना चाहिये। जिसे ऐसा दृढ़ निश्चय हो उसे प्रतिकूल संयोगों में भी तीव्र और कठिन पुरूषार्थ होता है; क्योंकि पुरूषार्थ के बिना आत्मा की प्राप्ति संभव नहीं है। क्रमबद्ध के अनुसार ही आत्मा की प्राप्ति होगी। क्रमबद्ध का निर्णय करनेवाली दृष्टि ज्ञायक की ओर ही जाती है, तभी क्रमबद्ध की सच्ची श्रद्धा होती है। तथा एक द्रव्य की पर्याय का दूसरे द्रव्य की पर्याय के साथ कोई संबंध नहीं है, एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का स्पर्श भी नहीं करता है। कर्म आत्मा को स्पर्श नहीं करते, आत्मा शरीर को स्पर्श नहीं करता। अहाहा ! ऐसा निर्णय होवे तभी दृष्टि सच्ची होती है।

चाहे कैसे भी प्रसंग अथवा संयोग हों आत्मा का ज्ञाता-दृष्टा रहने में ही शान्ति है। संयोग प्रतिकूल हो या अनुकूल, उनमें मैं एक शुद्ध चैतन्य आनन्दघन हूँ, यही दृष्टि रहना चाहिये। मेरा अस्तित्व सहज एक ज्ञायकभाव है, उसमें शरीरादि पर का या रागादि विभाव का प्रवेश नहीं है। मेरा जो स्वभाव है वह पर में नहीं जाता ह्न ऐसी दृष्टि रहने से परद्रव्य के प्रत्येक प्रसंग में जीव को शान्ति ही रहती है, खेद-खिन्नता नहीं होती।

हे जीव ! वर्तमान पर्याय में भी ज्ञान द्वारा तेरा परमात्मा तो परिपूर्ण ही है - ऐसा तू निस्सन्देह जान ! देह-देवालय में भगवान परमात्मा विराजमान है, पर्याय में अपूर्णता है; परन्तु वस्तु परिपूर्ण है - ऐसा जान ! इसतरह जाननेवाली क्षणवर्ती पर्याय ऐसी है कि त्रैकालिक परिपूर्ण परमात्मा को जान ले। वस्तु पर्याय में नहीं आती; परन्तु वस्तु जैसी और जितनी है उसका पूर्ण ज्ञान पर्याय में होता है। तू पूर्ण स्वरूप है, केवलज्ञानस्वभावी प्रगटरूप आत्मा है - ऐसा जान। अन्तर में परिपूर्ण दृष्टि होना उसे सम्यग्दर्शन कहते हैं। वस्तु जैसी है वैसी यथार्थ प्रतीति होना ही सम्यग्दर्शन है।

आचार्य कहते हैं कि भगवान ! तेरी पूंजी में-संपत्ति में-स्वरूप में राग-द्वेष बिलकुल नहीं है; परन्तु अपने स्वभाव के ज्ञातापने को छोड़कर अज्ञान के कारण दीर्घसूत्र (संसारसूत्र) चलता रहता है। तूने यह अच्छा, यह बुरा - ऐसा अनादिकाल से राग-द्वेष का मंथन किया है। अब तुझे अपने ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में डुबकी लगाना चाहिये, ज्ञानानन्द में सराबोर होना चाहिये। इसके बदले तू राग-द्वेष में डूब रहा है और तिरना कठिन हो रहा है। ज्ञानानन्द स्वभाव में विकल्प का उत्थान है ही नहीं; उसमें पर पदार्थ का तो त्रिकाल अभाव है तथा जो शुभाशुभ परिणाम उठते हैं, उनका भी अभाव है ह्न इसप्रकार ज्ञान में एकाग्र होकर विकल्प को पृथक करना ही आत्महित का सच्चा उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है।

अरे प्रभु ! निमित्त से उपादान में कोई कार्य होता ही नहीं। ज्ञान होने की योग्यतानुसार समयसार आदि शास्त्र सहजरूप में निमित्त होते हैं। प्रत्येक द्रव्य की पर्याय उस-उस समय की योग्यता से ही स्वतंत्र कार्यरूप परिणमति है, उसमें निमित्तभूत अन्य द्रव्य अकिंचित्कर है। योग्यता ही सर्वत्र शरणभूत है। कोई द्रव्य अन्य द्रव्य को ला सकता है या अन्य द्रव्य में फेरफार कर सकता है या उसे क्षेत्रान्तर कर सकता है - ऐसा माननेवाले सर्वज्ञ की आज्ञा से बाहर हैं, मिथ्यादृष्टि हैं। दर्शनमोह से मिथ्यात्व हुआ, ज्ञानावरण कर्म के उदय से ज्ञान की हीनता हुई आदि कथन शास्त्र में आते हैं। ये कथन तो उपादान से होनेवाले कार्य के काल में निमित्त कैसा होता है इसका ज्ञान कराने के लिये है, अत: व्यवहार कथन है।

यद्यपि द्रव्यकर्म तथा भावकर्म आत्मा के साथ आकाश के एक ही क्षेत्र में हैं, जिस आकाश के प्रदेश में शुद्ध चेतना है उसी प्रदेश में विकार है; परन्तु अपने प्रदेश की अपेक्षा से देखें तो वे विकारी परिणाम एक क्षेत्रावगाह रूप नहीं है। नित्यतादात्म्यरूप तथा अनित्य तादात्म्यरूप भी नहीं है। विकार और आत्मा के बीच संधि है; क्योंकि दो कहने से दो एक हुए ही नहीं हैं। ज्ञाता-दृष्टास्वरूप आत्मा शुद्धस्वरूपी है। वह एक वस्तु है और विकार दूसरी वस्तु है; क्योंकि शुभाशुभभाव आस्रवतत्त्व हैं और आत्मा जीवतत्त्व है। विकार भले ही पर्यायरूप है; परन्तु वह तत्त्वरूप है।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

कोलकाता : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर पद्मोपुकुर (भवानीपुर) में दिनांक 15 से 22 अक्टूबर, 03 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। तथा भगवान महावीरस्वामी निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष में दिनांक 23 से 25 अक्टूबर, 2003 तक श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनसार ग्रन्थ पर मार्मिक व्याख्यान हुये। जनता की विशेष मांग पर आपका एक व्याख्यान **दीपावली** के संदर्भ में तथा एक व्याख्यान **अहिंसा महावीर की दृष्टि में** विषय पर एशियाटिक सोसायटी में भी हुआ।

प्रात:कालीन प्रवचन के पूर्व शांति जाप, जिनेन्द्र अभिषेक एवं पूजन-विधान होता था। सायंकाल पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन चलते थे। प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन भी किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित मनीषजी शास्त्री और अभिनवजी शास्त्री, जबलपुर ने सम्पन्न कराये। **– हर्षद शाह**

(पृष्ठ 1 का शेष .....)

अतिरिक्त लाभ

1) जैन अपना धर्म, शिक्षा, संस्कृति, पुरातत्त्व आदि का संरक्षण अच्छी तरह से व विशिष्ट अधिकारों के साथ कर सकेंगे।

2) राज्य अल्पसंख्यक आयोग में एक सदस्य **जैन** प्रतिनिधि मनोनीत होगा।

3) राज्य अल्पसंख्यक आयोग **जैनों के हितों** की रक्षा करेगी।

4) जैनियों के साथ यदि कोई भेदभाव करता है तो उसे दूर करने के उपाय किये जायेंगे।

5) जैनियों को कोई प्रताडित करता है तो अल्पसंख्यक के रूप में सरकार उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगी।

6) उद्योग विभाग, समाज कल्याण विभाग के परामर्श पर विशेष रियायत पर ऋण उपलब्ध करायेगा।

7) अल्पसंख्यक वित्त निगम आर्थिकरूप से कमजोर जैन वर्ग को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करा सकेगा।

अल्पसंख्यक आयोग द्वारा किये जाने वाले कार्य

राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 2001 के अध्याय 3 धारा 9 के अनुसार आयोग 1) उनके विकास की प्रगति का मूल्यांकन 2)संविधान एवं कानून में प्रदत्त संरक्षण के कार्य को मॉनिटर करना। 3) उनके अधिकारों के हनन की शिकायतों की जांच पड़ताल करना। 4) उनके विरुद्ध भेद किये जाने पर समस्या को दूर करने के लिये उपाय करना। 5) सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक विकास से संबंधित विषयों का अनुसंधान करना। 6) उनके संबंध में केन्द्र सरकार व राज्य सरकार को समुचित उपाय करने के सुझाव देना। 7) उनकी कठिनाईयों व उनके संबंधित विषयों पर सरकार को विशेष रिपोर्ट देना।

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 अक्टूबर, 03 को भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र अभिषेक-पूजन के उपरान्त निर्वाण महोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का भगवान महावीरस्वामी के जीवन-दर्शन एवं सिद्धान्तों पर सरल-सुबोध शैली में विशेष व्याख्यान हुआ।

पंचदिवसीय शिविरों द्वारा धर्मप्रभावना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित राजेन्द्रकुमार पाटील शास्त्री, एलिमुन्नोली द्वारा कर्नाटक प्रान्त के विभिन्न स्थानों पर पंचदिवसीय शिविरों का आयोजन कर समाज को जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराया गया।

आपने दिनांक 1 से 5 अक्टू.03 तक हासन, 5 से 10अक्टू.03 तक मायसून्दरा, 10 से 15 अक्टू.03 तक बेलूर, 15 से 20 अक्टू.03 तक डडगा आदि स्थानों पर प्रवचन, कक्षा, बालकक्षा इत्यादि का आयोजन किया, जिसे स्थानीय समाज ने सराहा। **–श्रीमन्त नेज**

फैडरेशन की कार्यकारिणी गठित

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाड़ा की इकाई का गठन स्वाध्याय भवन, गोलगंज में किया गया। फैडरेशन के समस्त सदस्यों ने निर्विरोधरूप से नई कार्यकारिणी का गठन किया; जिसमें **अध्यक्ष**-तरुण पाटनी, **उपाध्यक्ष**-जिनेन्द्र जैन, संजीव सिंघई, सुबोध जैन, **सचिव**-दीपकराज जैन, **कोषाध्यक्ष**-प्रमोद जैन, **संगठन सचिव**-सुरेन्द्र जैन, राजू पाटनी, मीनू सिंघई, **सांस्कृतिक सचिव**-रमेश जैन, अनिल गौरव, प्रत्युश जैन, **साहित्यिक सचिव**-अखिलेश पाटनी, राज पाटनी, विवेकराज जैन, **सहसचिव**-सुनील जैन, संजय कौशल, अभिषेक पाटनी, **प्रचारसचिव**-अनिल वैभव, संजय सहारा, राजा जैन तथा **पाठशाला प्रभारी** हेतु अरुण जैन, प्रकाश जैन एवं निलेश जैन को चुना गया। **–दीपकराज जैन**

एक ही माह में दो-दो पंचकल्याणक

इस वर्ष मुमुक्षु समाज को उत्तरप्रदेश के कुरावली एवं सहारनपुर दोनों स्थानों पर नवम्बर माह में होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों का लाभ मिलेगा।

ज्ञातव्य है कि कुरावली में दि. 8 से 14 नवम्बर 2003 तक तथा सहारनपुर में दि. 18 से 24 नवम्बर 2003 तक होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व तथा बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

सभी साधर्मी बन्धुओं से अनुरोध है कि ऐसे मांगलिक अवसर पर सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेवें।

वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना द्वितीय वर्ष का परीक्षा परिणाम

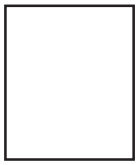
वसंत शाह

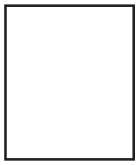
मंजू दोशी

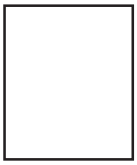
इंदू जैन

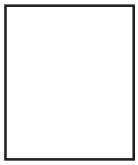
अनिता विनायके

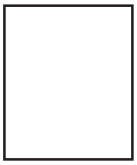
बेलाबेन मेहता

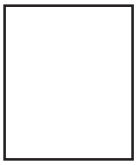
आरती विनायके

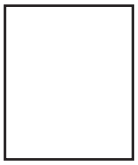
स्वर्णलता सौगानी

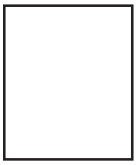
रेखाबेन शाह

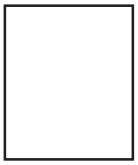
नयना शाह

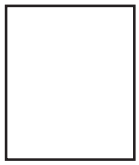
हीनाबेन शाह

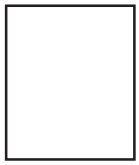
कुंदन शाह

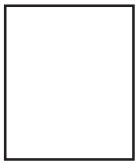
अलका जैन

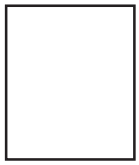
प्रज्ञाबेन शेठ

सुलोचना शाह

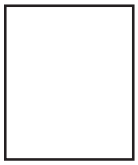
श्वेतल शाह

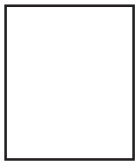
अमीबेन शाह

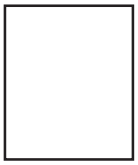
श्वेता जैन

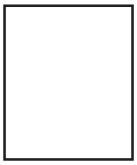
मधुबाला शाह

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन बोरीवली, मुम्बई द्वारा आयोजित वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना का एक वर्ष से सम्पूर्ण देश में कुशलतापूर्वक संचालन किया जा रहा था।

इस योजना के अंतर्गत समस्त जैन समाज को जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान रोचक एवं सरल प्रश्नोत्तरों के माध्यम से कराया गया। इसकी आधारभूत पुस्तकें वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1, 2, 3 थीं। इस योजना में सम्पूर्ण भारतवर्ष के करीब 100 केन्द्रों ने प्रारंभ से अंत तक सक्रिय भाग लिया तथा धर्मलाभ की दृष्टि से पूरे देश में हिन्दी, गुजराती एवं मराठी भाषा के लगभग 300 केन्द्रों को प्रश्न-पत्र भेजे गये।

इस योजना में कुल 500 विद्यार्थियों ने भाग लेकर अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसमें विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित परीक्षाओं में चयनित छात्रों में **प्रथम स्थान** वसंत एम. शाह रखियाल, **द्वितीय स्थान** मंजू दोशी थाणा-मुम्बई, इंदू जैन मुम्बई, **तृतीय स्थान** अनिता विनायके सेलू, बेलाबेन शैलेशकुमार मेहता अहमदाबाद, **चतुर्थ स्थान** आरती विनायके सेलू, **पंचम स्थान** स्वर्णलता प्रदीप सौगाणी भोपाल, रेखा बेन के. शाह रखियाल, नयनाबेन अरविन्दकुमार शाह रखियाल, हीना जी. शाह मलाड-मुम्बई, कुन्दन जे. शाह मलाड-मुम्बई, **षष्टम स्थान** अलका जैन जबलपुर, प्रज्ञाबेन शेठ, घाटकोपर-मुम्बई, सुलोचना ए. शाह रखियाल, श्वेतल सुनील शाह मुम्बई, रानी जैन झालावाड, **सप्तम स्थान** अमी अतुल शाह अहमदाबाद, **अष्टम स्थान** शर्मीला एस. जैन अशोकनगर, सोनल बखारिया बोरीवली-मुम्बई, **नवम स्थान** कु. श्वेता जैन पुत्री श्री विमलकुमारजी जैन छिन्दवाड़ा, **दशम स्थान** मधुबाला जे. शाह बोरीवली-मुम्बई, पूर्वी मनोरिया अशोकनगर ने प्राप्त किया। जिनके फोटो हमारे पास उपलब्ध है, यहाँ केवल उन्हीं परीक्षार्थियों के फोटो प्रकाशित किये जा रहे हैं।

इन प्रथम से दशम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार के अतिरिक्त प्रमाण-पत्र भी दिये गये।

- अल्पना भारिल्ल
निर्देशक, वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना

वैराग्य समाचार

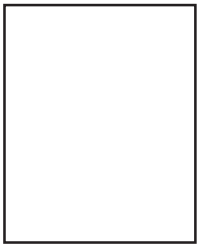

वयोवृद्ध श्री भगवानजी कचराभाई शाह, लन्दन का दिनांक 17 अक्टूबर, 2003 को देहावसान हो गया। आप पूज्य गुरुदेवश्री ने जो आध्यात्मिक क्रान्ति की है, उसके प्रबल पक्षधर थे। आपके निधन से मानो पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान की प्रभावना का स्तम्भ ढह गया।

पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर अग्रगण्य है; इसीलिये आपको भी ट्रस्ट से विशेष प्रेम रहा है। यहाँ से संचालित प्रत्येक गतिविधि में आपका अमूल्य सहयोग रहा है। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अनन्य भक्ति स्वरूप ही आपने श्री टोडरमल स्मारक भवन में स्थापित त्रिमूर्ति जिनालय में सिद्धक्षेत्र श्री पावापुरी का निर्माण करवाया।

आपने जिनवाणी एवं जिनधर्म पर शोध करनेवाले शोधार्थियों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की लाइब्रेरी संचालित करने हेतु श्री महावीर कुन्दकुन्द सरस्वती निलय के निर्माण में सहयोग दिया तथा अध्यात्म का अध्ययन करनेवाले छात्रों की सुविधा हेतु रत्नत्रय निलय नामक छात्रावास का निर्माण करवाया।

आपने श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित भोजनशाला में अंशदान देकर तात्त्विक गतिविधियों का लाभ लेने के लिये अल्प शुल्क पर भोजन प्राप्त कराने में सहयोग दिया। साथ ही मूल आचार्यों द्वारा लिखित शास्त्र, पूज्य गुरुदेवश्री का प्रवचन साहित्य एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा सरल-सुबोध भाषा में लिखा आध्यात्मिक साहित्य अल्पमूल्य में घर-घर पहुँचे; एतदर्थ प्रकाशन विभाग में बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया।

इसीप्रकार गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान को प्रसारित करनेवाली देश-विदेश की अनेक संस्थाओं को सहयोग प्रदान कर आपने उन्हें पल्लवित और पुष्पित किया है। इसप्रकार मुमुक्षु समाज को आपका अमूल्य सहयोग रहा है।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो यही - मंगल कामना है।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 78

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

पुनः कोई कहे कि वे तो वीतरागी हैं, उनको पलटने की इच्छा ही नहीं होती है; इसलिए नहीं पलटते; लेकिन इन्द्र की तो इच्छा है, वह तो पलट सकता है; इसलिए कहा कि इन्द्र भी नहीं पलट सकता।

न तो रागियों में श्रेष्ठ इन्द्र और न वीतरागियों में श्रेष्ठ जिनेन्द्र – दोनों ही नहीं पलट सकते हैं।

करणानुयोग में जो ये लिखा है कि इन्द्र में इतनी शक्ति है कि वह जम्बूद्वीप को पलट सकता है, वह तो शक्ति के माप का कथन है; लेकिन वह शक्ति कभी प्रयोग में आनेवाली नहीं है; क्योंकि वह जम्बूद्वीप को पलटनेवाला नहीं है ?

क्यों ?

क्योंकि जिसमें शक्ति होती है, उसे पलटने का भाव नहीं होता। वह कषाय के अभाववाला सम्यग्दृष्टि होता है। जिसमें पलटने का भाव होता है, उसमें शक्ति नहीं होती।

जैनदर्शन में जहाँ एक ओर यह लिखा कि एक द्रव्य परमाणु मात्रा को हिला नहीं सकता और यहाँ लिखा कि इन्द्र में इतनी शक्ति है कि वह जम्बूद्वीप को पलट दे – ये दोनों ही बातें शास्त्राों में हैं और दोनों ही सत्य है; क्योंकि परस्पर विरोधी कथन ये है ही नहीं।

इसमें पलट सकता है – ऐसा लिखा है, यह थोड़े ही लिखा कि इन्द्र ने जम्बूद्वीप को पलटा।

बहुत पहले मेरे पिताजी कहा करते थे कि एक आदमी कहता था कि जो यह मेरी अधमरी छोटी–सी कुतिया है, यह चाहे तो शेर को तोड़ खाए; लेकिन कभी चाहेगी नहीं, बुन्देलखण्डी भाषा में वह मन धरे तो शेर को तोड़ खाये, लेकिन कभी मन नहीं धरेगी।

इसीप्रकार इन्द्र चाहे तो जम्बूद्वीप को पलट दे; लेकिन कभी चाहेगा नहीं। वह तो शक्ति के माप का कथन है।

जैसे मैं चाहूँ तो पाँच किलो दूध पी सकता हूँ; लेकिन कभी पिया नहीं और कभी पीऊँगा भी नहीं। यह तो शक्ति का निरूपण है, इसका मतलब यह थोड़े ही है कि मैं ऐसा करूँगा ही करूँगा।

एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं है। यह समयसार के सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार में प्रतिपादित परमसत्य है; इसलिए इसे द्रव्य से और पर्याय से सर्वविशुद्ध कहते हैं।

हे भाई ! यह जैनदर्शन तो अकर्तावादी दर्शन है। जो इसे मानकर अपने उपयोग को सारे जगत से हटाकर अपनी आत्मा पर ले जायेगा, उसे मुक्ति की प्राप्ति अवश्य होगी।

तेईसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम की चर्चा चल रही है, इसमें जीवाजीव अधिकार से लेकर मोक्ष अधिकार तक का विषय स्पष्ट किया जा चुका है।

यह तो पहले ही बताया जा चुका है कि आचार्य अमृतचन्द्र ने समयसार ग्रन्थाधिराज को नाटक के रूप में सबसे पहले आत्मख्याति टीका में प्रस्तुत किया अर्थात् इस समयसार ग्रन्थ का नाटकीकरण किया। इसके बाद बनारसीदासजी ने समयसार नाटक लिखा। जिससे यह ग्रन्थ नाटक समयसार के नाम से ही प्रसिद्ध हो गया। बाद में भेद करने की दृष्टि से बनारसीदासजी के ग्रन्थ को नाटक समयसार और इस समयसार ग्रन्थ को समयसार के नाम से कहने लगे।

आज से हजारों वर्ष पूर्व पुरानी परम्पराओं में जो नाटक होते थे, उनमें एक सूत्राधार होता था, जो रंगमंच पर आकर सभी बातें बताता था।

चार सौ वर्ष पूर्व बनारसीदासजी के जमाने में नाटक के स्टेज को अखाड़ा कहा जाता था; इसलिए नाटक समयसार में भी बार–बार ऐसा कहा जाता है कि अब अखाड़े में स्वांग आया।

आजकल यह अखाड़ा शब्द पहलवानों के लड़ने की जगह के नाम से जाना जाता है और नाटक में इसका नाम हमने रंगमंच रख लिया है। हमें इन सभी बातों को भी स्पष्ट रूप से समझना होगा।

नाटक के पात्रा जो वेश बनाकर आते हैं, उस वेश को स्वांग कहा जाता है। सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार में स्पष्ट कहा है कि जीव से लेकर मोक्ष तक सभी स्वांग हैं।

जिस भगवान आत्मा की चर्चा हमें करनी हैं, वह अब करेंगे; क्योंकि अभी तक तो वह भगवान आत्मा अनेक स्वांगों में ही प्रस्तुत हुआ है। ये सब स्वांग भगवान आत्मा की वास्तविक स्थिति नहीं हैं अर्थात् ये वह भगवान आत्मा नहीं है, जिसके आश्रय से सम्यग्दर्शन– ज्ञान–चारित्रा की प्राप्ति होती है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव आत्मख्याति में जब मंगलाचरण करते हैं तो वे उस ज्ञान को नमस्कार करते हैं, जो ज्ञान उन वेशों में या स्वांगों में आनेवाले आत्मा को पहचान लेता है या जान लेता है कि यह स्वांग है और इससे भिन्न जो आत्मा है, वह अलग है।

बहुरूपिया बाजार में अलग–अलग वेश धारण करके आता है और उसकी विशेषता इसी बात में ही मानी जाती है कि वह जिसका वेश धारण करके आए तो अधिकांश लोग उसे उसी रूप में समझें। जब वह पुलिस इन्सपेक्टर का वेश बनाकर आए तो अधिकांश लोग उसे पुलिस इन्सपेक्टर ही समझें और उस के साथ पुलिस इन्सपेक्टर जैसा व्यवहार करें, तब वह सफल माना जायेगा।

यदि लोगों ने यह जान लिया कि यह तो बहुरूपिया है, पुलिस इन्सपेक्टर का वेश बनाकर आया है। तो पुलिस इन्सपेक्टर जब डांटे तो लोग हँसेंगे, घबड़ायेंगे नहीं। यह असफल स्वांग माना जायेगा।

सफल स्वांग तो तब कहलायेगा कि जब वह इन्कमटैक्स का ऑफीसर बनकर आए तो सेठजी का हार्टफैल के अतिरिक्त सबकुछ हो जाय।

इसीप्रकार नाटक समयसार में कहते हैं कि जो इन स्वांगों को पहचान ले कि यह तो बहुरूपिया है और वेश बनाकर आया है तो वह ज्ञानी है। तथा जो नहीं पहचान पाए और उसे वैसा ही समझे, वह अज्ञानी है।

इसलिए आचार्य अमृतचन्द्रदेव हर अधिकार के आरम्भ में उस ज्ञान को नमस्कार करते हैं, जो ज्ञान इस स्वांग को पहचान

लेता है और हर अधिकार के अंत में लिखते हैं कि बंध निकल गया, मोक्ष निकल गया।

दृष्टि के विषय में से मोक्ष को भी निकालना है, उसमें अपनापन स्थापित नहीं करना है; इसलिए मोक्षः निष्क्रान्तः – ऐसा लिखा है।

जिसप्रकार वह बहुरूपिया किसी की दुकान पर जाकर के रौब झाड़ता है और जो उसे पहचान नहीं पाता है, वह तो आवभगत करता है; लेकिन जो उसे पहचान लेता है, वह मुस्कुराता है और उसकी आज्ञा नहीं मानता है। तब वह बहुरूपिया उसी समय वहाँ से निकल जाता है; क्योंकि वह सोचता है कि यदि मैं ज्यादा देर रुका तो मेरी पोल खुल जायेगी अर्थात् पहचाननेवाला ऐसा व्यवहार करेगा कि आसपास के लोग भी जान लेंगे कि मैं बहुरूपिया हूँ।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब ज्ञान का उदय होगा; तब आस्रव आदि के भेदरूप विकल्प खड़े नहीं होंगे और भगवान आत्मा का अनुभव हो जायेगा।

अब इस सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार में कहते हैं कि जब ये सारे स्वांग समाप्त हो गए; तब जो मात्रा ज्ञानस्वभावी आत्मा रहा, उसका नाम है सर्वविशुद्धज्ञान।

ज्ञान ने अपनी तीक्ष्ण प्रज्ञाछैनी से जब बंध और आत्मा में, मोक्ष और आत्मा में भेद डाल दिया; तब जो त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा रहा, उसका नाम सर्वविशुद्धज्ञान है।

इसी बात को निष्कर्ष के रूप में कहते हैं कि वह सर्वविशुद्धज्ञान रूप भगवान आत्मा अकर्ता और अभोक्ता है।

यद्यपि इस समयसार ग्रन्थ के सबसे बड़े अधिकार कर्ता–कर्म अधिकार में यह बात कही थी; फिर भी उपसंहार के रूप में अब इस सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में पुनः उन्होंने इसी विषय को उठाया कि तुम यह निर्णय करो कि तुम ज्ञाता–द्रष्टा आत्मा हो, कर्ता–भोक्ता नहीं।

इसके पहले भी इस बात की चर्चा पूर्व में उन चार गाथाओं में की जा चुकी है।

यह स्पष्टीकरण तो किया जा चुका है कि ये भगवान आत्मा परद्रव्य का रंचमात्रा भी कर्ता–भोक्ता नहीं है और परद्रव्य भी इसके कर्ता–भोक्ता नहीं है। इन गाथाओं की टीका के अंत में लिखा था कि आत्मा अकर्ता अवतिष्ठते – इसतरह यह आत्मा अकर्ता सिद्ध हुआ।

तात्पर्य यह है कि जीव, अजीव में कुछ भी नहीं करता।

कोई ऐसा प्रश्न करे कि आप जो बात कह रहे हो, वह तो ठीक है; लेकिन यह भी बता दो कि फिर पर का करेगा कौन, जिससे मैं निश्चिन्त हो जाऊँ ?

अरे ! वह प्रश्न तो उसीप्रकार का है, जैसे आप कहें कि मेरे पास दो वर्ष का बच्चा है; इसलिए मैं प्रवचन में समयसार की बात सुनने में अपना उपयोग नहीं लगा पा रहा हूँ ? उससे कहते हैं कि बच्चे का विकल्प छोड़ो और मेरी बात ध्यान से सुनो, तो यह बात आपको अवश्य समझ में आयेगी।

फिर वह कहे कि यह तो बहुत अच्छी बात है; लेकिन आप यह तो बताओ कि फिर बच्चे को संभालेगा कौन ? यदि कोई संभालेगा तो मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा।

साथ में वह यह भी कहता है कि मैं यह देखना चाहता हूँ कि वह आदमी कितना जिम्मेदार है, जो मेरे बच्चे को संभाल रहा है। कहीं ऐसा न हो कि मेरे से पहले वह निश्चिन्त हो जाये और वह बच्चा चाहे जो कुछ करे। मुझे संभालनेवाला बताओ, मैं साल–छह महीने उसको संभालते हुए देख तो लूँ, ताकि मैं शान्ति से मर सकूँ।

अरे भाई ! देखो, इसे शांति से जीना नहीं है, शांति से मरना है। जीवन भर तो अशांत रहता ही है और मरने के बाद क्या होगा ? इसकी भी चिंता इसे निरन्तर रहती है।

मुझसे भी बहुत सारे लोग कहते हैं कि आपने अपने मरने के बाद के लिए क्या इन्तजाम किया ? मैं उनसे कहता हूँ कि मैं तो वर्तमानकाल में ही सबकुछ छोड़ना चाहता हूँ और आप मेरे मरने के बाद की जिम्मेदारी भी मुझे सौंपना चाहते हैं।

अभी तक तो इतना था कि मरने के बाद छुटकारा मिल जाएगा; लेकिन तुम तो कहते हो कि मैं मरने के बाद की भी चिन्ता करूँ। अरे भाई! हम लोग तो सात पीढ़ी के बाद आठवीं पीढ़ी की चिन्ता करनेवाले लोग हैं न।

हम निश्चिन्त नहीं हो पाते; इसलिए आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने संकेत के रूप में क्रमबद्धपर्याय की चर्चा की कि प्रत्येक द्रव्य का किस समय क्या परिणमन होगा, यह पूर्णतः सुनिश्चित है।

अब कोई कहे कि ठीक है, सबकुछ सुनिश्चित है; लेकिन कोई उसे करेगा, तभी तो होगा; क्योंकि निमित्त भी तो होता है, भले ही वह कर्ता न हो; लेकिन निमित्त होता तो है ही।

तो कहते हैं कि जिस द्रव्य का जो होना है, उसके वैसा होने का निमित्त भी निश्चित है।

कोई मुझसे पूछे कि हमारा यह टोडरमल विद्यालय चलेगा कि नहीं चलेगा, उससे कहता हूँ कि आप विकल्प छोड़ दो, यह सब क्रमबद्ध है, भगवान के ज्ञान में जो–जो झलका होगा, वह सब होगा।

अब यदि आप कहो कि निमित्त भी झलका होगा, न सही कर्ता के रूप में, निमित्त के रूप में ही; अतः बताओ कि कौन चलाएगा?

निमित्त चलाता थोड़े ही है, मैंने तो यह कहा था कि भगवान कहते हैं कि चलना होगा तो चलेगा और बंद होना होगा तो बंद होगा।

उसे इसमें निश्चिन्तता नहीं मिल सकती है कि ये विद्यालय तो चलेगा ही, आप चिन्ता मत करो; क्योंकि कोई न कोई आएगा और चलाएगा। अरे भाई ! यह तो कल्पना लोक की उड़ान है, वस्तुस्वरूप नहीं, जिसके आधार पर तू निश्चिन्त होना चाहता है।

वस्तुस्वरूप तो यह है कि जो होना होगा, वह होगा और जो नहीं होना होगा, वह नहीं होगा – ऐसा जानकर ही वह अकर्ता की ओर जायेगा। **(क्रमशः)**

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये ये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठिय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/–रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर से प्राप्त की जा सकती है।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

श्री टोडरमल महाविद्यालय के गौरवमयी छात्र

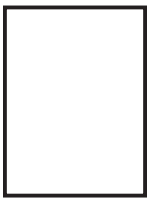

1. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान डॉ. दीपक जैन ने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा **पंचास्तिकाय संग्रह : एक अनुशीलन** विषय पर शोधकार्य पूर्ण कर पीएच.डी. (डॉक्टरेट) की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने यह शोध कार्य श्री दिग. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर के प्राचार्य डॉ. शीतलचन्दजी जैन के निर्देशन में पूर्ण किया।

आपने जैनदर्शन से शास्त्री तथा आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की है। तथा मुंबई से आयुर्वेदाचार्य की उपाधी भी प्राप्त की है।

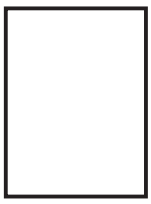

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान डॉ. भागचन्द जैन (बड़ागांव) ने विभाग की सहाचार्या डॉ. बीना अग्रवाल के निर्देशन में **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैनदर्शन की प्रासंगिकता** विषय पर शोधकार्य पूर्ण कर राजस्थान विश्वविद्यालय से पीएच.डी. (डॉक्टरेट) की उपाधि प्राप्त की।

वर्तमान में आप **ध्यान धारा** व **सम्यक्दर्शन** हिन्दी समाचार पत्र के सम्पादन के साथ महावीर पब्लिक स्कूल, जयपुर में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। पूर्वोक्त शोध प्रबन्ध में जैनदर्शन के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्षों के प्रतिपादन के साथ वर्तमान युगीन समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक ढंग से किया है ; जो जन सामान्य व विद्वानों को पठनीय है।

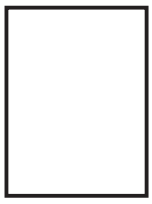

3. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री सुमतकुमार जैन, बरां (म.प्र.) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा 2 जून 2003 को राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न केन्द्रों पर ली गई **कनिष्ठ शोध अध्येयावृत्ति एवं राष्ट्रीय व्याख्याता पात्रता परीक्षा नामक संयुक्त परीक्षा** में प्राकृत एवं जैनागम विभाग से नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है। इससे पूर्व आपने कक्षा में प्रथम स्थान लेकर **स्वर्णपदक** प्राप्त किया।

वर्तमान में आप **अपभ्रंश कृति पं. तेजपाल विरचित वरांगचरिउ नामक पाण्डुलिपि का पाठ संपादन एवं अध्ययन** नामक शोध विषय में पीएच.डी.उपाधी हेतु जैन विश्वभारती संस्थान में अध्ययनरत है। इसवर्ष 2002-03 का **आदर्श छात्र पुरस्कार** भी संस्थान द्वारा आपको प्रदत्त किया गया।

इस गौरवमयी उपलब्धि के लिये तीनों स्नातकों को श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **– प्रबन्ध सम्पादक**

अहिंसा चैनल पर डॉ. भारिल्ल

सैटेलाइट जगत में जैनसमाज के धर्मलाभार्थ प्रारंभ हुये **अहिंसा** टी.वी. चैनल पर दिनांक 2 अक्टूबर,03 से जैनदर्शन के तार्किक विद्वान डॉ. भारिल्ल के अहिंसा, शाकाहार, वस्तु-स्वातंत्र्य, भगवान महावीर का जीवन-दर्शन आदि विविध विषयों के प्रवचनों का प्रसारण प्रात: 8.30 से 9.00 बजे तक हो रहा है। इनके अतिरिक्त अनेक साधु-संत एवं विद्वानों के प्रवचनों का लाभ भी इस चैनल पर प्राप्त होगा। यह चैनल नि:शुल्क है; अत: आप अपने केबल ऑपरेटर को निम्न सूचना देकर इसका लाभ ले सकते हैं –

Satellite	:	**INSAT (Expanded Coverage 93.5^{0}E)**
Polarisation	:	**Vertical**
Downlink Frequcney	:	**3915.5 MHz-3920.0MHz**
FEC	:	**3/4**
Symbol Rate	:	**3030 KSPS**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 से 24 नवम्बर, 03	सहारनपुर	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
10 एवं 11 दिसम्बर, 03	दिल्ली	शिलान्यास (आत्मार्थी ट्रस्ट)
12 एवं 13 दिसम्बर, 03	पूना	शिलान्यास (अस्पताल)

नवम्बर माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

5 **नवम्बर**	–	भगवान अरनाथ का ज्ञानकल्याणक
8 **नवम्बर**	–	भगवान संभवनाथ का जन्मकल्याणक
19 **नवम्बर**	–	भगवान महावीर का तपकल्याणक
24 **नवम्बर**	–	भगवान पुष्पदंत का जन्म एवं तप कल्याणक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) नवम्बर (प्रथम) 2003

J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

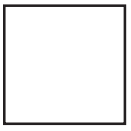

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127